शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय पर्यावरणः भारत नेपाल सम्बन्ध

प्राप्तिः 15.12.2022
स्वीकृतः 25.12.2022

93

डॉ० प्रवेश कुमारी
पोस्ट डॉक्ट्रल फैलो (आई०सी०एस०एस०आर०)
राजनीति विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः *parvesh019@rediffmail.com*

सारांश

दक्षिण एशिया एक असंतुलित एवं विषम संरचना है। इस असंतुलन एवं विषमता की प्रकृति इस प्रकार है कि भारत इस क्षेत्र का शक्तिशाली देश है। क्षेत्र, आबादी, आधारभूत संरचना, आर्थिक व सैन्य शक्ति आदि भारत को इस क्षेत्र के अन्य देशों से ज्यादा शक्तिशाली बनाते हैं। यद्यपि दक्षिण एशिया के सभी राष्ट्रों में कई चीजे समान हैं जैसे इतिहास, भूगोल, संस्कृति, समानता, समान अर्थव्यवस्था एवं उसकी समस्याएँ समान हैं। इस प्रकार वे एक ही पर्यावरण में अवस्थित हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जब अमेरिका, यूरोप, एशिया के राष्ट्रों ने अपने क्षेत्रीय संगठन बनाए और आर्थिक, सामाजिक सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया। तत्पश्चात् दक्षिण एशिया के राष्ट्रों ने भी अपना क्षेत्रीय संगठन बनाकर आर्थिक, सांस्कृतिक सहयोग को प्राप्त करने का प्रयास किया। इस क्षेत्र में भारत के शक्तिशाली राष्ट्र होने के कारण अन्य पड़ोसी देशों को सहायता देने की सद्भावना हमेशा बनी रही।

मुख्य बिन्दु

क्षेत्र, पर्यावरण, सार्क।

परिचय

द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर विश्व पटल पर पूँजीवादी एवं समाजवादी दो परस्पर विरोधी शक्तियों का उदय तथा उनका शीत युद्ध में लिप्त होना एक महत्वपूर्ण घटना थी। पूंजीवादी विचारधारा का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था और साम्यवादी विचारधारा का नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था, परन्तु सम्पूर्ण विश्व मात्र दो भागों में बंटा हुआ नहीं था अपितु अनेकों क्षेत्रों में बंटा हुआ था। जैसे पूर्वी यूरोप, पश्चिमी यूरोप, मध्य पूर्व, दक्षिण एशिया आदि। इन क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान व प्रभुत्व स्थापना की लालसा सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रही थी। दक्षिण एशिया क्षेत्र व उनके सम्बन्धों के अध्ययन से पूर्व आवश्यक है कि क्षेत्र की अवधारणा को समझने की चेष्टा की जाये। सैद्धान्तिक रूप से क्षेत्रीयता का अर्थ एक ऐसी केन्द्रीय व्यवस्था से लिया जाता है, जहाँ विभिन्न उद्देश्यों से सामाजिक एकत्रीकरण हो। वह सामाजिक एकत्रीकरण सामान्यतः क्षेत्र विशेष की संरचना, धर्म, भाषा, प्रथा एवं परम्परा तथा आर्थिक एवं सामाजिक विकास की स्थितियों, सामान्य ऐतिहासिक परम्परा, जीवन जीने की एक विशिष्ट शैली और साथ रहने की भावना से प्रकट होता है। ब्रुस एवं रैसेट ने क्षेत्रीयता के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में पाँच

मापदण्ड स्थापित किए हैं, जिन्हें वह सामाजिक और सांस्कृतिक एकत्व, राजनीतिक व्यवहार, पारस्परिकता और भौगोलिक सामीप्य के नाम से सम्बोधित करता है।

आर्थिक रूप से सभी दक्षिण एशियाई देश दरिद्रता के चंगुल में हैं और विकास की अपेक्षा करते हैं। भारत इस क्षेत्र में सबसे बड़े क्षेत्रफल व जनसंख्या वाला देश है तथा प्राकृतिक संसाधनों, तकनीकी, आर्थिक विकास सभी दृष्टियों से शेष राष्ट्रों से अधिक शक्तिशाली होने के कारण क्षेत्र के अन्य राष्ट्रों को अपना सहयोग विभिन्न क्षेत्रों में देता है। दक्षिण एशिया के सभी राष्ट्रों ने आर्थिक एवं राजनीतिक एकीकरण का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दिसम्बर 1985 में औपचारिक रूप से क्षेत्रीय सहयोग के लिए दक्षिण एशियाई राष्ट्रों का संगठन बनाया। जिसका मुख्य उद्देश्य इसके सदस्यों, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान, मालद्वीप के बीच क्षेत्रीय सहयोग विकसित करना था। सन् 2007 में अफगानिस्तान को भी इसमें शामिल कर दिया। इसका कार्य अपने सदस्य राष्ट्रों के बीच आर्थिक एवं सांस्कृतिक सहयोग एवं विकास के लिए क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग देना था। भारत दक्षिण एशिया सदस्य राष्ट्रों के प्रति सदैव चिन्तित रहा है तथा विदेशियों के इस क्षेत्र में हस्तक्षेप का भी भारत विरोधी है क्योंकि इन सभी आठ देशों में भारत ही सभी मायनों में सर्वाधिक सम्पन्न राष्ट्र है। भारत का गुजराल सिद्धान्त इसका उदाहरण है। गुजराल सिद्धान्त के अनुसार भारत दक्षिण एशिया के देशों को जो सहायता देगा उसके बदले में उनसे किसी प्रकार की विशेष प्रतिफल की आशा नहीं करता।

भारत–नेपाल सम्बन्ध

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारत–नेपाल के सम्पर्क सूत्र इतिहास के उस युग से जाने जाते हैं, जहाँ के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं है। सन् 1950 में भारत–नेपाल के मध्य शांति एवं मित्रता सन्धि हस्ताक्षरित हुई। यह ऐतिहासिक एवं अति महत्वपूर्ण सन्धि दोनों देशों की पारस्परिक सदभावना से जुड़ी हुई है। आधुनिक आधार पर इसने दोनों देशों के सम्बन्धों को आधारभूत ढांचा प्रदान किया है। नेपाल को भारतीय भूमि पर बिना किसी प्रतिबन्ध के आने जाने व रोजगार करने की छूट शामिल है। नेपाल विशाल पड़ौसियों भारत एवं चीन के बीच स्थित है। दोनों के बीच कैसे संतुलन रखा जाए इसके लिए चुनौती है। यद्यपि सांस्कृतिक सम्बन्ध उसे भारत से निकटता रखने के लिए बाध्य करते हैं।

1950 की सन्धि का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष भारत की उत्तरी सीमाओं की सुरक्षा तथा नेपाल में राजनीतिक स्थिरता का था। भारत–नेपाल की खुली सीमा पर उत्तर की ओर से सुरक्षा व्यवस्था कर पाना सम्भव नहीं था। अतः सुरक्षा अवधारणा के तहत उत्तरी सीमा को भारत की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण मानना आवश्यक था। परन्तु उसकी सुरक्षा के लिए नेपाल किसी प्रकार से सक्षम नहीं था। नेपाल को राजनीतिक एवं सुरक्षा की दृष्टि से सक्षम बनाने की व्यवस्था भारतीय सोच व विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण अंग था। नेपाल नरेश त्रिभुवन वीर विक्रम शाह के कार्यकाल में भारत व नेपाल के बीच विशेष सम्बन्धों का समय था। दोनों देशों में सुरक्षा सम्बन्धी व्यवस्थाओं पर पारस्परिक सहमति रही। महाराजा त्रिभुवन ने नेपाल की सुरक्षा व्यवस्था को बनाये रखने के लिए भारत की सुरक्षा व्यवस्था को स्वीकार किया। नेपाल की उत्तरी सीमा पर सुरक्षा चौकियां भी स्थापित की गईं। जिसमें भारत व नेपाल दोनों के कर्मचारी नियुक्त किए गए। सन् 1955 में राजा त्रिभुवन की मृत्यु के पश्चात् युवराज महेन्द्र वीर विक्रम शाह ने शासन संभाला। इसके पश्चात् भारत नेपाल सम्बन्धों में तनाव आता चला गया। राजा महेन्द्र को भारत से विशेष सम्बन्धों जैसे विचार अपनी राजनीतिक महत्वकांक्षा की पूर्ति में बाधक नजर आने लगे। उनके कार्यकाल में सीमा चौकियों पर भारतीय सेना के अधिकारियों व सैनिकों को हटा दिया गया। सन् 1970 में यह व्यवस्था पूरी तरह समाप्त कर दी गई।

राजा महेन्द्र की मृत्यु के उपरान्त सन् 1972 में युवराज वीरेन्द्र विक्रम शाह को सत्ता के शीर्ष पर स्थापित किया गया। वीरेन्द्र के सत्ता संभालते ही भारत के प्रति नेपाली दृष्टिकोण में परिवर्तन अनुभव किया जाने लगा। परन्तु वह भी भारत से नेपाल को एक पृथक रखना चाहते थे। यह दृष्टिकोण शांति क्षेत्र के प्रस्ताव के रूप में सामने आया। राजा वीरेन्द्र विश्व के दो अत्यन्त घनी आबादी वाले देशों भारत–चीन के बीच नेपाल को शान्ति क्षेत्र घोषित करना चाहते थे। विश्व के कुछ प्रमुख देशों का समर्थन भी उन्हें मिला, परन्तु भारत ने इसका समर्थन नहीं किया। भारत के अनुसार यह प्रस्ताव 1950 की भारत–नेपाल सन्धि से मेल नहीं खाता था। 1988 में नेपाल ने चीन से हथियार खरीदकर पुनः 1950 की सन्धि व 1965 में शस्त्र अधिनियम का उल्लंघन किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि दोनों देशों के सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न हो गई। जिसका स्पष्टतः प्रभाव 1989 में व्यापार एवं पारगमन की संधियों के नवीनीकरण पर पड़ा। 1950 की सन्धि के साथ–साथ भारत–नेपाल के मध्य व्यापार एवं पारगमन के लिए भी संधि अलग से हुई थी। नेपाल का आग्रह था कि व्यापार एवं पारगमन की सन्धि अलग–अलग की जाये। यह विवाद हर बार सन्धि के समय उठता परन्तु अन्ततः 1978 में नेपाल सन्धि को अलग–अलग करवाने में सफल हो गया। नेपाल आर्थिक रूप से भारत पर निर्भर रहा है, परन्तु उसने हमेशा इस निर्भरता को नकारने का प्रयास किया। राजनीतिक मुद्दों को आर्थिक लाभ के लिए उठाया जाता रहा। 1989 का आर्थिक गतिरोध इस दोहरी नीति का परिणाम था और भारत ने व्यापार व पारगमन की अलग–अलग सन्धि करने से इनकार कर दिया। हालांकि सन् 1989 में भारत में जनता दल के नेतृत्व में नई सरकार के सत्ता संभालने पर सभी गतिरोध समाप्त हो गए।

शीतयुद्धोत्तर दक्षिण एशिया में अमेरिकी हित सीमित हो गए। वैचारिक मतभेदों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रों को अपने खेमे में सीमित करने के बजाय अब वह अपने आर्थिक हितों के प्रति अधिक जागरूक हो गया। नेपाल में अब अमेरिका के हित चीन के प्रभाव को सीमित करने तक रह गए। इसी समय दोनों देशों की सरकारों में परिवर्तन ने अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दीं। नेपाल में प्रजातंत्र की स्थापना हुई, नेहरू युग से ही भारत नेपाल में प्रजातंत्र की स्थापना चाहता था। अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में होने वाले परिवर्तनों ने भारत का झुकाव नेपाल की ओर कर दिया। एक तरफ नई दिल्ली अमेरिका से दूसरी और बीजिंग से सम्बन्ध सुधारने का प्रयास कर रही थी। भारत व नेपाल दोनों देशों ने सार्क को मजबूत करने पर जोर दिया। क्योंकि इससे सदस्य राष्ट्रों के मध्य सहयोग का मार्ग कई क्षेत्रों में प्रशस्त हो सकता था। नेपाल में लोकतांत्रिक शक्तियों की विजय के कारण दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों में सुधार आया।

सन् 1998 में भारत द्वारा नाभकीय परीक्षण किया गया और उसी माह पाकिस्तान ने भी यह प्रक्रिया दोहराई। जिससे हिमालयी राष्ट्र उस समय बेचैनी महसूस करने लगा। इस काल में भी भारत द्वारा नेपाल को आर्थिक सहायता व सहयोग जारी रहा। यद्यपि भारत भूमि पर आई0एस0आई0 की गतिविधियों का मुद्दा नई दिल्ली के लिए चिन्ता का कारण बना रहा। भारतीय सुरक्षा एजेन्सियां लम्बे समय तक नेपाल में आई0एस0आई0 की गतिविधियों की जानकारी दे रही थीं। 1990 के दशक के मध्यकाल में माओवादियों का प्रभाव देश में तेजी से बढ़ा और नेपाली प्रशासन के लिए माओवादियों पर नियन्त्रण करना मुश्किल हो गया। सन् 1999 में इण्डियन एयरलाइन्स के विमान का काठमांडू में अपहरण करके कंधार ले जाने से स्पष्ट हो गया कि भारत की सुरक्षा के खिलाफ नेपाल में आई0एस0आई0 नेपाल की भूमि का गैरकानूनी उपयोग करने में सफल हो गई। जिससे भारत ने अपनी नाराजगी प्रकट की। परिवर्तन के इस दौर में नेपाल में सन् 2001 में राजमहल हत्याकांड की एक दुखद घटना घटित हुई, जिसमें राजा वीरेन्द्र व रानी सहित परिवार के सात

सदस्यों की हत्या कर दी गई। इसके पश्चात् ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह नेपाल के अगले राजा बने। देश में राजनीतिक अस्थिरता और माओवादियों की हिंसात्मक गतिविधियों के कारण उन्हें कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। महत्वपूर्ण परिवर्तन के तहत राजा ने सभी अधिकार अपने हाथ में लेते हुए देश में आपातकाल घोषित कर दिया। राजा के तानाशाही शासन ने माओवादियों और देश की लोकतांत्रिक शक्तियों को हाथ मिलाने का अवसर दिया। दोनों शक्तियों का संयुक्त आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिसने राजा को झुकने के लिए विवश किया और पहले छीने प्रशासनिक अधिकार वापस करने पर मजबूर किया।

सन् 2008 में संवैधानिक सभा के चुनाव हुए माओवादी शक्तियों ने सर्वाधिक सीटें प्राप्त की। पुष्प कमल दहल (प्रचण्ड) के नेतृत्व में माओवादियों ने गठबंधन सरकार बनाई। प्रचण्ड ने शपथ लेने के मात्र एक सप्ताह बाद चीन की यात्रा की। नेपाल के इतिहास में चीन की यात्रा करने वाले पहले निर्वाचित अध्यक्ष बने। तदुपरान्त सितम्बर 2008 में नेपाली प्रधानमंत्री ने भारत की यात्रा की। हालांकि नेपाली प्रधानमंत्री ने भारत के साथ अपने सम्बन्धों को अतुलनीय बताते हुए कहा कि इसकी तुलना अन्य देशों से नहीं की जा सकती। यात्रा के दौरान नेपाली प्रधानमंत्री ने भारत से 1950 की शांति एवं मित्रता सन्धि को संशोधित करने की मांग की। भारत ने सन्धि को परिवर्तित परिस्थितियों में करने के लिए सहमति के संकेत दिये। नेपाल पर बीजिंग का बढ़ता प्रभाव नई दिल्ली के लिए चिन्ता का कारण था। काठमाण्डू में माओवादी सरकार की स्थापना ने भारत की तुलना में चीन के उद्देश्यों को ज्यादा पूरा किया। मई 2009 में नेपाली प्रधानमंत्री प्रचण्ड ने स्तीफा दे दिया। जिससे नेपाल में अस्थिरता उत्पन्न हो गई। मई 2009 में माधव कुमार नेपाल के नेतृत्व में सरकार बनी।

द्वितीय संविधान सभा के चुनाव नेपाल में नवम्बर 2013 में सम्पन्न हुए जिसमें नेपाली कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। सुशील कुमार कोयराला के नेतृत्व में सरकार बनी। प्रधानमंत्री कोयराला भारत–नेपाल सम्बन्धों की पृष्ठभूमि सहयोग एवं नेपाल के साथ गहरे सांस्कृतिक सम्बन्धों को अच्छी प्रकार समझते थे। अतः उन्होंने भारत एवं चीन से संविधान निर्माण का कार्य पूर्ण करने में मदद की आशा व्यक्त की। 2008 से 2013 तक कई प्रधानमंत्री बने और अपदस्थ हुए परन्तु नेपाल में राजनीतिक स्थिरता का अभाव रहा।

इसी क्रम में मई 2014 में भारत में लोकसभा चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें भारतीय जनता पार्टी की सरकार नरेन्द्र दामोदर मोदी के नेतृत्व में गठित हुई। द्विपक्षीय सम्बन्धों के तहत प्रधानमंत्री मोदी के लिए सत्ता में आने के बाद ''पहले पड़ोस की नीति'' के मद्देनजर नेपाल उनके शुरूआती विदेशी दौरों में से एक रहा। इसके पहले अन्तिम बार वर्ष 1997 में नेपाल के साथ भारत की कोई द्विपक्षीय वार्ता हुई थी। भारतीय प्रधानमंत्री की अगस्त 2014 की इस यात्रा से दोनों देशों में रिश्तों का एक नया अध्याय शुरू हुआ। इस यात्रा को एक सकारात्मक राजनीतिक माहौल के रूप में देखा गया। इसी के साथ यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच सन् 1950 की शांति एवं मित्रता सन्धि की समीक्षा, समायोजन और आधुनिकीकरण पर सहमति बनी। जिसकी मांग नेपाल लम्बे समय से कर रहा था। दोनों देशों के बीच लम्बे समय से चली आ रही सुस्ती का रास्ता खुला, साथ ही नेपाल में भारत की नियत पर उठ रही आशंकाओं को भी तोड़ा। इसी क्रम में भारतीय प्रधानमंत्री नवम्बर 2014 में काठमाण्डू दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे। इस दौरान काठमांडू व नई दिल्ली के बीच सीधी बस सेवा की शुरूआत की गई। तत्पश्चात् विनाशकारी भूकंपों से ध्वस्त हुई नेपाली अर्थव्यवस्था के पुर्ननिर्माण हेतु भारत की ओर से एक अरब डॉलर की सहायता की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई। इस सहायता का उद्देश्य नेपाल में पुर्ननिर्माण का कार्य भली भाँति हो सके तथा राजनीतिक रूप से

परिवर्तनशील अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल सके। इस प्रकार भारत ने दोनों देशों के सम्बन्धों को मजबूती देने का प्रयास किया, भारत इसमें सफल भी रहा।

परन्तु नेपाल में नए संविधान की घोषणा से भारत–नेपाल सम्बन्धों में कड़वाहट आ गई। इसकी शुरूआत नेपाल के तराई क्षेत्रों में मधेशी समुदाय द्वारा प्रान्तों के सीमांकन एवं संविधान में संशोधन के लिए चलाए जा रहे आंदोलन और भारत–नेपाल सीमा पर तथाकथित नाकेबंदी से हुई है। जिसके कारण भारत विरोध की भावनाएं फैली। भारत ने सदैव नेपाल की आन्तरिक राजनीति में स्थिरता एवं सीमा पर बसे मधेशियों की राजनीतिक मांगों को देखते हुए समावेशी संविधान बनाने की सलाह दी।

नेपाल में नया संविधान लागू होने के बाद राजनीतिक परिवर्तन आया। सुशील कुमार कोयराला के पदमुक्त होने के बाद साम्यवादी दल के उम्मीदवार के0पी0 शर्मा ओली नेपाल के नए प्रधानमंत्री बने, उन्होंने देश के वर्तमान हालातों के लिए भारत को दोसी ठहराया। नेपाल सरकार ने आरोप लगाया कि मधेशियों के समर्थन में भारत सरकार ने नेपाल की आर्थिक घेराबंदी को अंजाम दिया। हालॉकि मधेशी आंदोलन के उग्र रूप को देखते हुए संविधान के खिलाफ आंदोलन कर रहे मधेशियों के सामने नेपाल सरकार झुक गई। मंत्रीमण्डल की बैठक में अनुपातिक प्रतिनिधित्व, निर्वाचन क्षेत्र परिसीमन से सम्बन्धित दोनों मांगों में संशोधन किया गया। इसके पश्चात् नेपाली प्रधानमंत्री ने भारत यात्रा की। इस यात्रा से दोनों देशों के सम्बन्ध पुर्नबहाल एवं सामान्य होने की दशा में अग्रसर हुए।

परन्तु वर्ष 2017 में भारत नेपाल में कड़वाहट फिर दिखाई देने लगी। जब नेपाल चीन की वन बेल्ट वन रोड परियोजना में शामिल हुआ। भारत नहीं चाहता था कि नेपाल इस परियोजना में शामिल हो। इसके पीछे भारत सरकार की चिंता वाजिब थी, क्योंकि दक्षिण एशिया में चीन का प्रभाव लगातार बढ़ रहा था। नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश ये सभी देश चीन की बेल्ड एण्ड रोड इनिसेटिव परियोजना में शामिल हो गए। भारत इस परियोजना के समर्थन में नही था। नेपाल में चीन के बढ़ते प्रभाव के कारण भारत–नेपाल सम्बन्धों में तल्लखी बढ़ती चली गई।

सन् 2018 में नेपाल में नई सरकार का गठन हुआ जिसमें के0पी0 शर्मा ओली फिर से प्रधानमंत्री बने। पदग्रहण करने के पश्चात् नेपाली प्रधानमंत्री ने भारत यात्रा की। इस दौरान तीन महत्वपूर्ण समझौते रेल लिंक समझौताः रक्सोल से काठमाण्डू, नेपाल को जलमार्ग से समुद्र तक रास्ता देना, कृषि क्षेत्र में नई साझीदारी से सम्बन्धित पर दोनों देशों के बीच सहमति बनी। इसी वर्ष अप्रैल माह में भारतीय प्रधानमंत्री नेपाल यात्रा पर गए। इस यात्रा के दौरान क्षेत्रीय सहयोग पर बातचीत हुई। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने विभिन्न सैक्टरों में सहयोग स्थापित करने के लिए क्षेत्रीय संगठन सार्क को रेखांकित किया।

भारत नेपाल सम्बन्धों के मध्य विवाद एक बार फिर उत्पन्न हो गया। जब कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए भारत द्वारा धारचूला लिपुलेख मार्ग का उद्घाटन करने के बाद नेपाल ने इसका विरोध किया। नेपाल का मानना है कि यह क्षेत्र नेपाल की सीमा में आता है, पिछले कई वर्षों से नेपाल इस तरह की प्रतिक्रिया कर भारत को परेशान करता रहा है जबकि भारत इस तरह की गतिविधियों के पीछे चीन के प्रति नेपाल के बढ़ते रूझान के रूप में देखता है। इसके बाद नेपाल ने अपना नया नक्शा जारी किया और इन क्षेत्रों को नेपाल का हिस्सा बताया। जिस पर भारत ने आपत्ति व्यक्त की।

पड़ोसी देशों से सम्बन्ध बनाए रखना किसी देश की विदेश नीति का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। यही कारण है कि दुनिया भर के देश अपने पड़ौसी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिए तमाम तरह की नीतियां लागू करते हैं। भारत ने भी इस संदर्भ में नेबरहुड फर्स्ट की पॉलिसी को अपनाया है। इसका उद्देश्य भारत का अपने पड़ौसी देशों के साथ सम्बन्धों को बेहतर करना है।

निष्कर्ष

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय पर्यावरण में भारत नेपाल सम्बन्धों में अनेक परिवर्तन आए हैं। नेपाल में संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना हुई और राजतन्त्र पूरी तरह समाप्त हो गया। भारत ने नेपाल के ऐतिहासिक लोकतांत्रिक परिवर्तन में नेपाल को पूरा सहयोग दिया। भारत–नेपाल सम्बन्धों में बीच–बीच में उतार चढ़ाव आते रहते हैं परन्तु भारत ने सदैव नेपाल के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की है। दक्षिण एशिया में भारत सबसे सक्षम एवं विकसित देश है। इस कारण इस क्षेत्र के अन्य सभी राष्ट्रों को यह लगता है कि भारत अपनी क्षमता के आधार पर अन्य पड़ौसी राष्ट्रों से दबाव की नीति अपनायेगा, परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। भारत सदैव पड़ौसी राष्ट्रों को सहायता देने के लिए तत्पर है। अब क्षेत्र के अन्य राष्ट्रों को यह सोचना होगा कि वे भारत की क्षमताओं का फायदा उठाना चाहते हैं या नहीं। अब यदि कुछ बुनियादी सिद्धान्तों के आधार पर चला जाए तो भारत व नेपाल के सम्बन्धों को स्थायी सकारात्मक व मधुर बनाया जा सकता है। इसके लिए भारत एवं नेपाल दोनों देशों के नीति निर्माताओं को सहयोग और मैत्री सम्बन्धों को सुदृढ़ करने पर ध्यान रखना चाहिए कि परस्पर एक दूसरे पर आवश्यक अनावश्यक आरोप लगाना दोनों के राष्ट्रीय हित के अनुकूल नहीं है। आज के समय की जरूरत विभिन्न क्षेत्रों में अधिकतम सहयोग की एक प्रणाली विकसित करना है। जिससे दोनों देशों की आन्तरिक क्षमता का अधिक से अधिक प्रयोग हो सके। भारत एवं नेपाल दोनों के लिए आने वाले वर्षों में स्थायी एवं सुदृढ़ सहयोग के लिए सकारात्मक परिस्थितियाँ मौजूद हैं।

सन्दर्भ

1. जेम्स, एन0 रोजिनो. (1976). वर्ल्ड पालिटिक्स. दः फ्री प्रैसः लन्दन. पृष्ठ **414.**
2. चतुर्वेदी, शैलेन्द्र कुमार. (1970). इण्डिया नेपाल रिलेशन्स इन लिंकेज परसपैक्टिव. बी0आर0 पब्लिकेशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **6–10.**
3. (1952). भारत–नेपाल शांति एवं मित्रता सन्धि.
4. मुनी, एस0डी0., मुनी, अनुराधा. (1984). रीजनल को–आपरेशन इन साऊथ एशिया. नेशनल पब्लिशिंग हाउसः नई दिल्ली. पृष्ठ **21–25.**
5. धर्मदासानी, एस0डी0. (1976). इण्डियन डिप्लोमेसी इन नेपाल. आलेख प्रकाशनः जयपुर. पृष्ठ **32–33.**
6. राय, जयंत कुमार. (2008). इण्डियन फॉरेन रिलेशन्स. 1947–2007. रूटलेज पब्लिकेशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **454–457.**
7. सिंह, राजकुमार. (2009). ग्लोबल डाइमेन्शन ऑफ इण्डिया नेपाल पॉलिटिकल रिलेशन्स पोस्ट इण्डिपेन्डेन्स. ज्ञान पब्लिशिग हाउसः नई दिल्ली. पृष्ठ. **354–360.**
8. (2014). टाइम्स ऑफ इण्डिया. नई दिल्ली. 5 अगस्त.
9. भारत–नेपाल सम्बन्धः वर्तमान परिदृश्य drishtiias. com/ hindi/ printpdf/ cold-neighbourhood-on-india-nepal-ties.
10. अधिकारी, चन्द्र शेखर. (2018). न्यू चैनल्स आफ को–ऑपरेशन ओपन. द काठमाण्डू पोस्ट. 8 अप्रैल.

11. प्रधान, आर0. (2017). ''पी0एम0 सेज न्यू प्रपोजल विल वी एसेप्टेबल टू आल. द काठमाण्डू पोस्ट. 9 अप्रैल.
12. मीणा, राकेश कुमार (2018). प्रधानमंत्री मोदी की नेपाल यात्रा. एक समीक्षा. http://www.icwa.in>showcontent. 6 june 2018.
13. (2020). हिन्दुस्तान. 9 मई.
14. (2020). द हिन्दू. 13 जून.